व्यञ्जना – शब्द की तीसरी शक्ति व्यञ्जना है। काव्य में निहित गूढ़ अर्थ को विशेष रूप से व्यञ्जित या अभिव्यक्त करने के कारण इसे व्यञ्जना कहा जाता है। जब किसी शब्द के अभिप्रेत अर्थ का बोध न तो मुख्यार्थ से होता है और न ही लक्ष्यार्थ से, अपितु कथन के अनुसार (संदर्भ से) अलग-अलग अर्थ से या व्यंग्यार्थ से प्रकट होता है तो वह शब्द व्यञ्जक कहलाता है और शब्द की जिस शक्ति से अन्य अर्थ अर्थात् सूक्ष्म व्यंग्यार्थ का बोध होता है, उसे व्यञ्जना कहते हैं। विश्वनाथ ने व्यञ्जना के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा –

विरतास्वभिधाऽऽद्यासु ययाऽर्थो बोध्यतेऽपरः।
सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥
(साहित्य-दर्पण – 2/12 का उत्तरार्द्ध एवं 13 का पूर्वार्द्ध)

व्यञ्जना का क्षेत्र दोनों वृत्तियों की अपेक्षा अधिक व्यापक तथा विस्तीर्ण है। ध्वनि सिद्धान्त का मूलाधार व्यञ्जना ही है। शृंगारादि रसों का आस्वादन भी इस वृत्ति को स्वीकार किए बिना नहीं हो सकता। यथा – 'गतोऽस्तमर्कः' (सूर्य डूब गया) इस लौकिक वाक्य के उपस्थित होने पर किसी स्थान पर अलग-2 स्थितियों में, अलग-अलग व्यवसाय के लोग बैठे हैं, जिनमें गायों को चराने वाला ग्वाला, श्रोत्रिय ब्राह्मण, दिनभर हाट में दुकान लगाने वाला व्यापारी और सूर्य डूबते ही किसी से मिलने को का वचन देने वाला व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। सभी लोग आपस में बातचीत करते हुए 'गतोऽस्तमर्कः'

कहते हैं, सुनकर सबने अपने-2 अनुसार इसको ग्रहण किया। ग्वाले ने अर्थ समझा - 'अब गाय लौटाने का समय हो गया।' श्रोत्रिय ने तात्पर्य ग्रहण किया - 'अब संध्यावंदन करना चाहिए।' व्यापारी ने 'दूकान समेटनी चाहिए।' मिलने-जाने वाले ने सोचा - 'मिलने-जाने का समय हो गया' - इस प्रकार पृथक-पृथक आशय ग्रहण किया। जबकि इस वाक्य का वाच्यार्थ इतना ही है - 'सूर्य अस्ताचल को चला गया।' चूँकि सूर्य सचमुच अस्त हुआ है, अतएव इस वाच्यार्थ या मुख्यार्थ में कोई अनुपपत्ति (नहीं होना) नहीं है। साथ ही जब मुख्यार्थ का बाध ही नहीं हुआ तो 'लक्षणा' का अवसर ही उपस्थित नहीं होता। फिर ये अलग-2 अर्थ शब्द की किस शक्ति या वृत्ति से गृहीत हुए? अर्थात बोधकर्ताओं की विविधता के कारण इस वाक्य के वाच्यार्थ से भिन्न अर्थों की प्रतीति जिस शक्ति से हुई, वही व्यञ्जना है।

स्पष्ट है साहित्य-दर्पणकार ~~विश्वनाथ~~ विश्वनाथ ने कहा अभिधा आदि वृत्तियों के विरत होने पर जिस तीसरी वृत्ति से अन्यार्थ का बोधन होता है, वह शब्द तथा अर्थादि में रहनेवाली वृत्ति 'व्यञ्जना' कहलाती है। तात्पर्य है - अभिधा और लक्षणा अपने-अपने अर्थ को उपस्थित करके विरमित हो जाने पर जिसके द्वारा सबसे विलक्षण दूसरे अर्थ अर्थात व्यंग्यार्थ की प्रतीति कराते हैं, वही वृत्ति व्यञ्जना कहलाती है।

Uma Pandey
B.A. III (Contd.)

Contd. S Kr. [illegible]